डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 02/06/20
Page

विषय - संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र

किरातार्जुनीयम् - प्रथमसर्ग मात्र

पद्यांश व्याख्या

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम् ।
स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः ॥1॥

अन्वयः - कुरूणाम् अधिपस्य श्रियः पालनीं प्रजासु वृत्तिं वेदितुं यम् अयुङ्क्त, वर्णिलिङ्गी सः वनेचरः विदितः (सन्) द्वैतवने युधिष्ठिरं समाययौ ॥

भाषार्थ :- (कुरूणामधिपस्य) कुरुदेश के राजा की (श्रियः पालनीम्) राजलक्ष्मी को प्रतिष्ठापित करनेवाले (प्रजासु वृत्तिं वेदितुम्) प्रजा के प्रति व्यवहार को जानने के लिए (यम युङ्क्त) युधिष्ठिर ने जिसे नियुक्त किया था, (वर्णिलिङ्गी सः वनेचरः) वह ब्रह्मचारी वेषधारी वनेचर (किरात) (विदितः सन्) सभी वृत्तान्त जानता हुआ (द्वैतवने) द्वैतवन में (युधिष्ठिरं समाययौ) युधिष्ठिर के पास आया।

भावार्थ :-

द्वैतवन में निवास करते हुए युधिष्ठिर ने जिस वनेचर को दुर्योधन की प्रजानीति का भेद जानने के लिए भेजा था, वह सम्पूर्ण वृत्तान्त जानकर वापस आगया।

Scanned with CamScanner

टिप्पणी :- महाकाव्य के लक्षण का पालन करते हुए प्रथम पद्य में ही कथावस्तु का निर्देश किया गया है। वनवासी किरात का उल्लेख करके आगे उपस्थित होने वाले किरात वेषधारी कविन का भी संकेत किया गया है। आरम्भ में 'श्रियः' शब्द का प्रयोग मंगलार्थ है।

(2) 'वने वनेचरः' में 'वने' स्वरव्यञ्जन-समूह की एकबार आवृत्ति होने से छेकानुप्रास अलंकार है, 'वर्णसाम्यमनुप्रासः, छेकवृत्तिगतो द्विधा, सोऽनेकस्य सकृत्पूर्वः'।

(3) इस सर्ग में वंशस्थ छन्द है, जिसका लक्षण है- 'जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ'। अर्थात् जिसके प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण, रगण होते हैं, जगण में मध्य गुरु, तगण में अन्त लघु और रगण में मध्य लघु होता है।

जगण	तगण	जगण	रगण
।ऽ।	ऽऽ।	।ऽ।	ऽ।ऽ

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम् ॥1॥

पदव्याख्या - अधिपः - अधि पातीति अधिपः, तस्य। अधि + पा + कर्तरि 'आतश्चोपसर्गे' सूत्र से 'क' प्रत्यय। पालनीम् = पालन करनेवाली, प्रतिष्ठापित करनेवाली, पाल्यते अनया इति पालनी, ताम्। पाल् + ल्युट् करणे + ङीप् स्त्रीप्रत्यय 'करणाधिकरणयोश्च' से करण के अर्थ में 'ल्युट्' प्रत्यय हुआ। प्रजासु वृत्तिम् = प्रजाओं पर व्यवहार, प्रजा के प्रति आचरण। प्रकर्षेण जायन्ते इति प्रजाः, तासु। प्र + जन् + ड प्रत्यय + टाप् स्त्रीप्रत्यय। वृत्तिम् = व्यवहार, वर्तते ऽनया वृत्तिः वृत् + क्तिन् करणअर्थमें। इति।

Scanned with CamScanner